हिन्दी साप्ताहिक

REGI No:- UAHIN/26/A3063

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -01 ♦ अंक-02 ♦नैनीताल - शुक्रवार 29 मई 2026 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/

एसआईआर के दौरान मतदाता सूची से नाम कटने पर नहीं जाएगी नागरिकता, सुप्रीम कोर्ट ने कहा

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को चुनाव आयोग की ओर से कराए जा रहे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआ. ईआर) की वैधता पर फैसला देते हुए नागरिकता की चिंताओं पर भी बड़ा बयान दिया। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ ने कहा कि एसआईआर की प्रक्रिया के तहत मतदाता सूची से नामों को हटाना नागरिकता का निध र्िारण नहीं करता है। पीठ ने कहा कि आयोग सीमित उद्देश्य से नागरिकता की जांच कर सकता है।

क्या चुनाव आयोग किसी व्यक्ति की नागरिकता का निर्धारण कर सकता है? इस व्यापक सवाल पर सुप्रीम कोर्ट ने बड़ी चिंता का निवारण किया। उसने कहा कि आयोग नागरिकता जांच सकता है, लेकिन सिर्फ संबंधित व्यक्ति को मतदाता सूची में शामिल करने या बाहर करने के सीमित दृष्टिकोण से। कोर्ट ने कहा कि आयोग नाम हटा सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह व्यक्ति भारत का नागरिक नहीं रह गया, इसका नागरिकता निर्धारण से कोई लेना-देना नहीं हैकोर्ट ने कहा कि आयोग को नागरिकता के आधार पर मतदाता सूची से हटाए गए व्यक्तियों को 4 सप्ताह में केंद्र के सक्षम प्राधिकारी के पास भेजना होगा। कोर्ट ने कहा, आयोग का फैसला, चुनावी उद्देश्यों तक सीमित है। वह नागरिकता के प्रश्न पर अंतिम फैसला नहीं ले सकता। यह फैसला सक्षम प्राधिकारी के अधीन रहेगा। सक्षम प्राधिकारी कानून के अनुसार कदम उठाएगा और नोटिस जारी कर सुनवाई करेगा। उसके फैसले पर व्यक्ति का नाम मतदाता सूची में जोड़ा-हटाया जाएगा। दरअसल, एसआईआर की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं में उन मतदाताओं का भी जिक्र है, जिनके नाम 2002-2003 की मतदाता सूची में नहीं थे और उस सूची में मौजूद व्यक्ति से मतदाता को अपने पैतृक संबंध स्थापित करना जरूरी था। ऐसे में मतदाताओं की नागरिकता को लेकर सवाल उठने लगे और उनको संबंधित दस्तावेज पेश करने को कहा गया। हालांकि, याचिकाकर्ता. ओं का तर्क था कि एसआईआर से आयोग को नागरिकता का निर्धारण करने का अधि कार नहीं हैकोर्ट ने बिहार में नागरिकता के आधार पर मतदाता सूची से हटाए गए लोगों को 4 सप्ताह में सक्षम प्राधिकारी के पास भेजने को कहा है। प्राधिकारी विध ानसभा-निकाय चुनाव से पहले प्रक्रिया पूरी करेगा। अनुपस्थिति के आधार पर हटे नागरिक भी अपील कर सकते हैं।

उत्तराखंड की विकास यात्रा सही दिशा में आगे बढ़ रही : मुख्यमंत्री धामी

अल्मोड़ा। उदय शंकर नृत्य एवं संगीत अकादमी में आयोजित राज्य स्तरीय एसड. ीजी अचीवर्स अवार्ड समारोह में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग किया। समारोह में सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले 32 संगठनों, व्यक्तियों और समूहों को सम्मानित किया गया। साथ ही जिला स्तरीय एसडीजी वार्षिक रैंकिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छह जनपदों को भी पुरस्कृत किया गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि समाजहित में नवाचार और उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तित्वों और संस्थाओं का सम्मान पूरे प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि सीमित संसाध नों के बावजूद इन संस्थानों ने अपने मजबूत संकल्प और परिश्रम से असाधारण उपल. ब्धियां हासिल की हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पर्यावरण और विकास के संतुलन के साथ ही स्थायी विकास संभव है और इसी सोच के साथ राज्य सरकार वर्ष 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि एक समय नीति आयोग के एसडीजी इंडिया इंडेक्स में उत्तराखंड 10वें स्थान पर था, जबकि अब राज्य पूरे देश में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार सुशासन, गरीब कल्याण, सीमांत क्षेत्रों के विकास और आधारभूत सुविधाओं को मजबूत करने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि राज्य की जीडीपी में 7. 23 प्रतिशत और प्रति व्यक्ति आय में 4. 1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि बेरोजगारी दर में 4.4 प्रतिशत की कमी आई है। केंद्रीय राज्य मंत्री अजय टम्टा ने कहा कि एसडीजी रैंकिंग में राज्य को मिला शीर्ष स्थान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के संकल्. पों का परिणाम है। प्रमुख सचिव नियोजन एवं सीपीपीजीजी के मुख्य कार्यकारी अधि

कारी डॉ. आर. मीनाक्षी सुन्दरम ने एसड. ीजी की अवधारणा और राज्य की उपल. ब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। जिलाधि कारी अंशुल सिंह ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि जनपद का समग्र विकास प्रशासन की प्राथमिकता है। समारोह में जिला पंचायत अध्यक्ष हेमा गैड़ा, विधायक डॉ. प्रमोद नैनवाल, दर्जाधारी राज्य मंत्री गंगा बिष्ट और गोविंद पिलख्वाल, मेयर अजय वर्मा, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक चंद्रशेखर आर. घोड़के सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधि कारी और प्रतिभागी मौजूद रहे।

सीएम धामी के अल्मोड़ा दौरे पर यूथ कांग्रेस ने किया विरोध प्रदर्शन

अल्मोड़ा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के अल्मोड़ा दौरे के दौरान बुधवार को यूथ कांग्रेस और छात्र नेताओं ने एसएसजे विश्वविद्यालय में कथित अनियमितताओं और छात्र हितों की अनदेखी को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने कई कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया। युवा कांग्रेस कार्यकर्ता गांधी पार्क चौघानपाटा से रैली निकालकर एसएसजे विश्वविद्यालय की ओर बढ़ रहे थे। इस दौरान भारी पुलिस बल ने उन्हें रोक दिया, जिससे पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच तीखी नोकझोंक हुई। बाद में कई युवा कांग्रेस और छात्र नेताओं को हिरासत में लेकर थाने ले जाया गया। प्रदर्शनकारियों ने विश्वविद्यालय में प्रोफेसर भर्ती में आरक्षण रोस्टर में कथित अनियमितता, निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार, छात्र विरोधी नीतियों और शिक्षा व्यवस्था की बदहाली के आरोप लगाए। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने विरोध में नारेबाजी की। युवा कांग्रेस नेता गोपाल भट्ट ने कहा कि प्रदेश में भर्ती घोटाले और पेपर लीक के मामलों से युवा परेशान हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार शिक्षा माफियाओं को संरक्षण दे रही है और छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ हो रहा है। पार्षद वैभव पांडे ने कहा कि नगर निगम की उपेक्षा और विकास कार्यों में भेदभाव के विरोध में भी प्रदर्शन किया गया। उन्होंने कहा कि जब तक अल्मोड़ा की जनता और नगर निगम की मांगों पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाएगा, तब तक लोकतांत्रिक संघर्ष जारी रहेगा।

गर्मी से राहत के आसार, कल से बारिश का अलर्ट

देहरादून। उत्तराखण्ड में भीषण गर्मी से राहत मिलने के आसार हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग, देहरादून द्वारा जारी पूवा. र्नुमान के अनुसार राज्य के विभिन्न जनपदों में आगामी दिनों में वर्षा, गर्जन, आकाशीय बिजली चमकने, ओलावृष्टि तथा तेज झोंकेदार हवाएं चलने की संभावना व्यक्त की गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग, देहरादून द्वारा दिनांक 27 मई, 2026 को जारी पूर्वानुमान के अनुसार दिनांक 28 मई को जनपद उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर एवं पिथौरागढ़ में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इन जनपदों में कहीं-कहीं गर्जन के साथ आकाशीय बिजली चमकने, ओलावृष्टि तथा 40-50 कि.मी. प्रति घंटा से बढ़कर 60 कि.मी. प्रति घंटा तक की गति से झोंकेदार हवाएं चलने की संभावना व्यक्त की गई है। इसके अतिरिक्त राज्य के शेष जनपदों में भी कहीं-कहीं गर्जन के साथ आकाशीय बिजली चमकने तथा 40-50 कि.मी. प्रति घंटा की गति से झोंकेदार हवाएं चलने की संभावना व्यक्त की गई है। दिनांक 29 मई, 2026 को राज्य के उत्तरकाशी, देहरादून, टिहरी, रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर एवं पिथौरागढ़ जनपदों में कहीं-कहीं गर्जन के साथ आकाशीय बिजली चमकने, ओलावृष्टि तथा 40-50 कि.मी. प्रति घंटा से बढ़कर 60 कि.मी. प्रति घंटा तक की गति से तेज हवाएं चलने की संभावना के साथ आरेंज अलर्ट जारी किया गया है। साथ ही उत्तरकाशी, देहरादून, टिहरी, रुद्रप्रयाग एवं चमोली जनपदों में कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की भी संभावना व्यक्त की गई है।

दिनांक 30 मई तथा 31 मई के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र द्वारा संबंधि त जनपदों को सतर्क रहने तथा आवश्यक एहतियाती व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया है। संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखने, आपदा प्रबंधन से जुड़े विभागों को अलर्ट मोड में रखने तथा त्वरित कार्रवाई हेतु सभी आवश्यक संसाधनों को तैयार रखने के निर्देश दिए गए हैं। सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास विनोद कुमार सुमन ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि खराब मौसम के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचें, सुरक्षित स्थानों पर रहें तथा आकाशीय बिजली एवं तेज हवाओं के दौरान पेड़ों, बिजली के खंभों एवं कमजोर संरचनाओं से दूर रहें। मौसम संबंध ी नवीनतम जानकारी एवं प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें।

सम्पादकीय

उमड़ता आस्था का जनसैलाब

गंगोत्री,यमुनोत्री च,बद्रीकेदारनाथय:।
चतुर्धामं समायाति, पुण्यभूमौ दिवं यथा।
धर्मयात्रा शुभं यातु, भक्तजनहिताय च।
देवभूमौ सदा तिष्ठेत, हरिहराणां कृपारसा।।

अर्थात

गंगोत्री,यमुनोत्री,बद्रीनाथ और केदारनाथख्ये चार धाम मिलकर पुण्यभूमि में दिव्य-स्थान बनाते हैं। इस पवित्र यात्रा का आयोजन शुभ हो ,मंगलमय हो, जिससे भक्तों को कल्याण प्राप्त हो और देवभूमि पर सदा हरि-हर (विष्णु-शिव) की कृपा बनी रहे।

इस वर्ष चारधाम यात्रा में भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़ रहे हैं अभी तक लगभग 24.50 लाख श्रद्धालुओं ने चारों धामों (यमुनोत्री, गंगोत्री,केदारनाथ और बद्रीनाथ) के दर्शन कर एक नया रिकॉर्ड बना दिया है।

बता दें कि चारधाम यात्रा मार्ग के हर प्रमुख पड़ाव पर पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं, आवास, स्वच्छता और यातायात प्रबंधन की व्यवस्थाएं की गई है।इसके अलावा दुर्गम पहाड़ी भूगोल और लगातार बदलते मौसम को देखते हुए संवेदनशील व भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखी जा रही है।

किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए एसडीआरआफ, डीडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीमें हाई अलर्ट पर हैं और त्वरित राहत एवं बचाव कार्यों के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

यूं ही सुखद मनोरम वातावरण में यात्रा चलती रहे।हर तरफ शांति एवं सौहार्द का वातावरण हो।राज्य में सुख समृद्धि बनी रहे।आध्यात्मिक यात्रा यूं ही चलती रहे, जन-मन में सुख शांति बनी रहे, यही ईश्वर से कामना है।

जय देवभूमि उत्तराखंड!!जय भारत!!

डॉ.गार्गी मिश्रा

ऐसा तो होना ही है और!

यदि दुनिया की आठ अरब आबादी के 95 प्रतिशत लोग भेड़-बकरी जीवन जीते हुए हैं तो क्या यह होनी इतिहास के कारण नहीं है? पृथ्वी के सभी इंसान खोपड़ी में कमोबेश 99 प्रतिशत एक से डीएनए लिए हुए हैं बावजूद इसके मानव समाजों में फर्क है। 95 प्रतिशत गंवार बनाम पांच प्रतिशत सभ्य-स्वतंत्र जीवन का जो फर्क है वह यदि परिवेश और डीएनए के कारण है तो दोनों की प्रवृत्तियों में इतिहास भी सच्चाई लिए हुए है।ज् क्या पता इसी के कारण मानवता बार-बार संकट में आती हो। मानो हम सब अतीत की अपंगताओं से नियति के मारे हैं और अब अपना व पृथ्वी के अस्तित्व का संकट बना बैठे हैं।

प्रलय का मुहाना-3: सौ वर्षों का रिकॉर्ड निकालें। मानवता को झिंझोडने वाली आपदाओं, संघर्षों को गूगल पर खोजें तो क्या मिलेगा? यह रोना कि ऐसा तो होना ही था! होनी ही थी यूक्रेन और रूस में लड़ाई। होना ही है धर्म संघर्ष और जेहा. द। मनुष्य को एक-दूसरे से लगातार लड़ते रहना है। दूसरे शब्दों में इंसान की नियति है जो वह शोषण, पॉवर भूख, विपदाओं-आपदाओं की 'सरवाईवल ऑफ द फिटेस्ट' की परीक्षा में हमेशा बैठा रहे! इससे जो जीतेंगे, वे संपन्न बनेंगे और सभ्यता बनाएंगे। सभ्यताओं के अधिपति बनेंगे, सुख भोगेंगे। अंत में वे अपने भार से पतन के शिकार होंगे। बर्बरों की तलवारों से तबाह होंगे।यह सत्य सभ्यताओं के इतिहास का लब्बोलुआब है। तभी अमे. रिका यदि अफगानिस्तान से भागा तो क्या आश्चर्य! पहले सोवियत संघ भी भागा था। बर्बर से कौन सभ्य जीत सकता है? महामारी लौट आई तो क्या आश्चर्य? मनुष्य कैसे प्रकृति से जीत सकता है? क्या सत्य नहीं कि पिछली सदी, उससे पिछली सदी याकि पूरा अतीत विपदाओं-आपदाओं से भरा पड़ा है। क्या लगता नहीं कि मनुष्य प्रजाति उत्थान-पतन, विकास-विनाश के बिल्ट-इन बीज, जन्मजात जन्मपत्री को लिए हुए है! होना वहीं है जो होनी है! कलियुग में हिंदुओं को जीना ही है। निरंकुशता के पिंजरों में चाइनीज, रूसी नस्ल के लोगों को सांस लेना ही है। कितना ही मनुष्यों में भरत-मिलाप हो लेकिन भाई-भाई लड़ेंगे ही। गौर करें रूस और यूक्रेन की रिश्तेदारी पर! नौवीं सदी से नाते-रिश्ते हैं लेकिन बावजूद इसके सन् 2014 और सन् 2022 में लड़ाई का अनुभव है तो वह होनी है।

तो क्या अतीत से जन्मपत्री है? पृथ्वी के आठ अरब आबादी के अलग-अलग बाड़ो के अपने-अपने इतिहास की जन्मपत्री अपनी पूर्वनिर्धारित चाल लिए हुए होती हैं, जिन्हें क्रमबद्धता से बूझें तो भविष्य दिखेगा!

इतिहास से बनी जन्मपत्री कमाल की है। उससे सोचें तो हिंदुस्तान के दो टुकड़े होने ही थे। हिंदू-मुस्लिम विभाजन होना ही था। दोनों को विभाजन के बाद भी लड़ते रहना है। खंड-विखंड होना है। ऐसे ही सोवियत संघ ढहना ही था। इस्लामी जिहाद का भभका लगातार बने रहना है तो चीन की महत्वाकांक्षाएं लगातार पांव पसारते हुए होंगी। इसलिए क्यों न मानें कि सभ्यताओं के संघर्ष, नए-आधुनिक किस्म के महाभारत की आगे भी 'होनी' है।

पिछले सौ वर्षों या पांच सौ सालों के मानव समाज के पोस्टमार्टम का निचोड़ बूझें। जाहिर होगा वैश्विक परिवर्तनों के कारण-प्रभाव का सत्व व मनुष्य स्वभाव एक पैटर्न लिए हुए है। वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी जन्मपत्री में ट्रांसफर होता है। तभी इंसान होनी की नियति में जीता आया है।

मानव अस्तित्व और इतिहास एक-दूसरे की झांकी हैं। इसलिए मानव समाज की जन्मपत्री सामान्य बात है। स्मृतियों का कालजयी टाइम कैपसूल है इतिहास। किसी ने ठीक कहा कि सभी लोग जिंदा इतिहास हैं। लोग वहीं भाषा बोलते हैं जो विरासत से प्राप्त है। वहीं करते हैं जो पूर्वज करते आए हैं। जीवन का जीना इतिहास से, इतिहास में और इतिहास के लिए होता है। इतिहास जीवन वास्तविकताओं की खदान है, अनिवार्यता है न कि एक ख्याल या उपयोगी विषय! यह सत्य व्यक्ति विशेष पर लागू है तो समाज, कौम, देश, सभ्यता की सामूहिकता पर भी समान रूप से लागू है।

इतिहास की इतनी विवेचना इसलिए है क्योंकि मानव विकास के बाकी शास्त्रों से भले बहुत कुछ संभव हुआ हो लेकिन वह सब ज्ञात इतिहास के क्रम और कुंडली में है। उस नाते संभव है भविष्य में पृथ्वी के लोगों की कलह, संघर्ष, मारकाट, युद्ध, महायुद्ध याकि देव बनाम असुर प्रवृत्तियों के कारण और परिणामों का एक पूर्वानुमान विज्ञान बने। मनुष्य स्वभाव की अतीत की सत्यताओं पर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से अलग-अलग सभ्यताओं की कमियों-खूबियों की प्रोग्र. ामिंग हो जाए। उसी पर फिर मानवता के भविष्य को सुरक्षित, बेहतर बनाने की प्रोग्रामिंग के कंप्यूटरकृत मॉडल भविष्यवाणी करते हुए होंगे।क्या तब लग सकेगा होनी (यह तो होना ही था) का वैज्ञानिक पूर्वानुमान और 'होनी-अनहोनी' पहेली की सच्ची मानवशास्त्रीय या ज्योतिष विवेचना संभव? इतिहास के डायग्नोसिस से पूर्वानुमान संभव है तो इलाज भी संभव! यह मुमकिन नहीं कि मनुष्य चेतना से इतिहास मिट जाए या खत्म हो जाए। इसकी गलतफहमी में कई दार्शनिकों और विचारकों ने मानवता का बहुत नुकसान किया है।

बस्तर में खेलों का विकास

बस्तर संभाग के मुख्यालय जगदलपुर में नौकरी के लिए 1988 नवम्बर को जब मैं निकला तो माँ बोली वहां मत जा, आ. दिवासी लोग तीर मार देते हैं । देशभर के आम जनमानस में बस्तर की अमूमन यही तस्वीर थी । क्षेत्रफल में केरल से बड़ा होने के बावजूद और खनिज भंडारों के अकूत संपदा का मालिक होने के बाद भी बस्तर अत्यन्त पिछड़ों में गिना जाता था । जब तक बस्तर मध्यप्रदेश का हिस्सा था यहाँ विकास की चिडिया को पंख भी नहीं लगे थे । सामान्य विकास का नामोनिशान नही था तो खेलों का विकास तो जैसे कल्पना के आकाश में उडने जैसा ही था । वर्ष 2000 का नवम्बर महीना बस्तर के लिए सौगात लेकर आया जब अटल बिहारी जी की सरकार ने छतीसगढ़ राज्य बनाया मध्यप्रदेश से अलग करके । तब शनैः शनैः विकास की नदिया का पानी बस्तर की ओर भी बहने लगा कहूँ ,तो अतिशयोक्ति न होगी। वर्ष 1975 से आरम्भ हुई ठाकुर विजय बहादुर गोल्ड कप फुटबाल प्रतियोगिता मानों यहाँ का विश्व कप फुटबाल था । यही एकमात्र खेल था जिसके लिए पूरा जगदलपुर और आस पास के उड़ीसा के भी गावों के लोग मैच देखने आया करते थे और शहर का सिटी ग्राउंड खचाखच भर जाता था । लेकिन इसके अलावा कोई ऐसा उल्लेखनीय खेल और नहीं था, जो इतना अधिक लोकप्रिय हो । वैसे तो यहाँ वॉलीबाल, कबड्डी, हॉकी, क्रिकेट भी चलन में थे पर अत्यधिक लोकप्रिय फुटबाल ही रहा जिसमें पश्चिम बंगाल, पंजाब , केरल, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार , ओडिघ्सा, गोवा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश की नामी टीमें आया करती थीं । लगभग 20 वर्ष पहले जगदलपुर शहर में महिलाओं के राष्ट्रिय खेल का आयोजन हुआ जिसमे विभिन्न खेल शामिल थे, खो खो, कबड्डी, फुटबाल, लम्बी कूद, ऊँची कूद, बाल बैडमिंटन, हैंडबाल, वॉलीबाल इत्यादि, इसमें देश के लगभग सभी राज्यों से टीमों ने शिरकत की थी । उसकी वजह से बस्तर में खेल गतिविधियों की हलचल बढ़ गई और इस खेल के बाद नेशनल शालेय खेल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ और मुझे लगता है, इस राष्ट्रीय खेल ने बस्तर में खेलों के विकास के लिए तडके का काम किया , क्योंकि इससे बालिकाओं में खेल के प्रति जागरूकता बढ़ी और उनमें आत्मविश्वास जागृत हुआ और मैंने व्यक्तिगत रूप से बड़ा फर्क ये महसूस किया कि जगदलपुर में स्थित माता रुक्मणि बालिका आश्रम डिमरापाल में जबरदस्त उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ और बालिकाओं को प्रोत्साहित करने ले लिए आश्रम के प्रबंधक पद्मश्री धर्मपाल सैनी जी का अत्यंत महत्वपूर्ण और अविस्मरनीय और अद्भुत योगदान रहा ।

बस्तर संभाग में माता रुक्मणि संस्थान के लगभग 40 आश्रम हैं, जो पद्मश्री धर्मपाल सैनी जी की तपस्या का फल है, उन्होने बस्तर के गाँव गाँव से बीहड़ वन क्षेत्र से बच्चियों को शिक्षित करने के लिए अपने आश्रम में लाया उनको पढ़ाया लिखाया उनकी इसी समाज सेवा और विशिष्ट कार्य के लिए उनको पद्मश्री से नवाजा गया । समाज सेवा और बालिका शिक्षा के क्षेत्र में वे अग्रणी तो थे ही परन्तु खेल के लिए उनके योगदान को नकार नहीं सकते । वे स्वयं ही सुबह से बालिकाओं को लेकर मैदान में पहुँच जाते हैं और उनका उत्सा. हवर्धन करते हैं । उनके सान्निध्य में रहकर कई बच्चे निखर कर आगे आये । बालमति ने तो राज्य स्तरीय मैराथन में पहला स्थान पाया था । बस्तर में खेलों के विकास में सैनी जी को कोई भूल नहीं सकता । आज भी 93 वर्ष की आयु में वे आपको खेल के मैदान में मिल जायेंगे। उनके जज्बे को मेरा नमन है । वे हमारे लिए बस्तर का गौरव हैं एक धरोहर हैं और माता रुक्मिणी आश्रम खेलों में मील का पत्थर । आज स्थिति ये है की आश्रम की बालिकायें राज्य स्तर पर, राष्ट्र स्तर पर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी परचम लहरा रहीं हैं । कई खेलों में आश्रम की बालिकाओं का अहम् योगदान साबित हो रहा है, चाहे मैराथन हो, तीरंदाजी हो, फुटबाल हो, योग हो ।

यहाँ पर मैं नारायणपुर स्थित रामकृष्ण मिशन का उल्लेख करना भी महत्पूर्ण समझता हूँ । यहाँ के बालकों ने देश की स्कूल स्तर की प्रतिष्ठित फुटबाल प्रतियोगिता संतोष ट्राफी जीतकर बस्तर को गौवान्वित किया और न सिर्फ बस्तर का, राज्य का डंका फुटबाल में बजा दिया । वहां के बच्चों ने भी कई खेलों में राष्ट्रीय स्तर पर बस्तर का नाम ऊँचा किया है, बीजापुर बचेली के बच्चे बैडमिंटन में काफी अच्छा कर रहे हैं । शतरंज के खेल में जगदलपुर के लव्यज्योति ने बालक वर्ग में 2021 में अन्डर 12 में राष्ट्र स्तर पर धमक पैदा की राष्ट्रीय स्तर पर हुई ऑलाइन प्रतियोगिता में उसने प्रथम स्थान प्राप्त कर बस्तर और पूरे छतीसगढ़ का मान बढ़ाया यह बस्तर के लिए एक बड़ी उपल. ब्धि है । मुझे उसमे भविष्य का ग्रैंडमास्टर नजर आ रहा है । बस्तर की पर्वतारोही नैना धाकड़ ने हिमालय की सबसे ऊंची चोटी माऊंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की । नैना धाकड़ की यह उपलब्धि अद्भुत और लाजवाब है । वह बस्तर के खिलाडियों की प्रेरणा है नैना छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला है जिसने माऊंट एवरेस्ट पर तिरंगा लहराया है । बस्तर में कई खेलों में अनेक संभावनाएं हैं क्योंकि यहाँ प्रतिभाओं की कमी नहीं है ,फुटबाल जुडो कराटे, किक बॉक्सिंग, क्रिकेट, एथलेटिक्स, बैडमिंटन , नौका दौड़ में खेल प्रतिभाएं सामने आ रही हैं तथा राष्ट्रीय स्तर पर दस्तक दे रही हैं । ग्रामीण खेलों का भी माहौल जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के सहयोग से बहुत बढिया बन रहा है। खो खो, कबड्डी, योग, मलखम्ब इत्यादि में बस्तर के बच्चे आगे निकल रहे हैं । मार्च 2022 हरियाणा के पंचकुला में सम्पन्न हुई राष्ट्रिय सिविल सर्विसेस की बैडमिंटन प्रतियोगिता में भी बस्तर के मनोज लकड़ा, नेगी , जगत साव, बी एस ध्रुव , एस। एस। शेंडे, डॉ। बी प्रकाश मूर्ती , राबर्टसन, नितेश महंत, हलीम और नेताम ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर और पदक जीतकर बस्तर में खेलों के विकास की ओर बढ़ते कदमों की आहट से ध्यान आकर्षित किया है । कोचिंग व्यवथा के कमी की वजह से खिलाडियों को उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता लेकिन अब बस्तर में एनआई एस कोच भी उभरने लगे हैं जो बस्तर के आने वाले भविष्य की ओर इंगित करते हैं । साथ ही कुछ अच्छे पुराने खिलाड़ी भी बालक और बालिकाओं के लिए पसीना बहा रहे हैं जो सराहनीय है । क्रिकेट में आनंद मोहन मिश्रा, राजकुमार महतो, जोगेन्द्र ठाकुर, अनुराग शुक्ला, करनदीप सग्गू एथलेटिक्स में अजय व संजय मूर्ती, हाकी में पिल्ले, जुडो में मोईन अली, मकसूदा हुसैन, ठाकुर मास्टर्स एथलेटिक्स में नबी मोहम्मद, अशोक राव, बास्केटबाल में संग. ीता तिवारी, फुटबाल में रूपक मुखर्जी ,गा. ैतम कुंडू, विश्वजीत भट्टाचार्य इत्यादि। रूपक मुखर्जी तो फुटबाल के राष्ट्रीय रेफरी भी बने, शतरंज में राजेश जेना और रविन्द्रनाथ कुलगुरु बस्तर से पहले आर्बिटर बने ।

आयुर्वेद में है कमर दर्द के ये प्रमुख कारण, ऐसे करें उपचार

कमर में मंद से असहनीय दर्द होना, कमर में भारीपन, कमर से पिंडलियों तक दर्द फैलना, पैरों में सुन्नपन, चलने-बैठने और लेटने में परेशानी होना मुख्य लक्षण हैं। कमरदर्द यानी लो-बैक पेन लाइफस्टाइल से जुड़ी समस्या है। रीढ़ की हड्डी के दर्द को आयुर्वेद में कटिशूल कहा जाता है। यह समस्या वात दोष के कारण होती है। आयुर्वेद के अनुसार खानपान और जीवनशैली में बदलाव करके इससे बचा जा सकता है। आइए जानते हैं इसके प्रमुख लक्षण...

1 डली गुड़ और थोड़े से चने रोजाना खाएं, जोड़ों के दर्द से निजात पाएं

1. तीखे व कसैलेरस युक्त आहार जैसे अधिक मिर्च व तेलयुक्त आहार, चटपटा खाना, फ्रिज में रखा हुआ खाना, अधिक शीतल पेय, आइसक्रीम, अत्यअधिक बीज वाले फल व सब्जी जैसे अमरूद, बैगन, काचरी, परवल आदि लेने से कमरदर्द की समस्या होती है।

2. अत्यधिक उपवास, आवश्यकता से अधिक व्यायाम, गद्दे बिस्तर पर सोना, मोटे तकिये का उपयोग, कुर्सी पर कमर और गर्दन को झुकाकर बैठना, दोपहिया वाहन का अधिक उपयोग, टीवी और कम्प्यूटर के साथ अधिक समय बिताना भी इसके कारण हैं।

3. बढ़ने पर रीढ़ पर भार पडऩा, हार्मोन असंतुलन, कब्ज, हार्निया, सिजेरियन प्रसव।

4. तंबाकू, गुटखा, जर्दा, बीड़ी, सिगरेट के कारण हड्डी में शिथिलता और खोखलापन होने कमरदर्द की स्थिति बनती है। वृद्धावस्था में हड्डियों में क्षय, गर्भावस्था में गर्भ के वजन के कारण या कमर में चोट लगने के कारण हड्डी का सरकना भी इसका एक कारण है।

घरेलू नुस्खे से करें इलाज

1- सरसों/तिल के तेल में चुटकीभर सेंधा नमक और 2-3 लहसुन की कलियां डालकर हल्का गर्म करें और इससे कमर की नित्य मालिश करें

2- एक गिलास पानी में 10 ग्राम सोंठ या जीरा डालकर उबालें फिर छानकर गुनगुना पीएं।

3- मलाई रहित दूध में आधा केला और मिश्री मिलाकर लें।

4- मलाई रहित दूध में हल्दी डालकर लें।

जानें भीगे चने खाने के 7 फायदे, कब्ज दूर करता है डायबिटीज से करता है बचाव

जानें भीगे चने खाने के 7 फायदे, कब्ज दूर करता है डायबिटीज से करता है बचावजानें भीगे चने खाने के 7 फायदे, खून के लिए काफी फायदेमंद होता है। रोज चने खाने से एनीमिया की बीमारी से बचा जा सकता है।

कब्ज दूर करता है डायबिटीज से करता है बचाव

1. चने में भरपूर प्रोटीन होता है। यह आपकी मसल्स को काफी मजबूत बनाता है। रोज भीगे हुए चने खाने से मसल्स टोंड होती हैं।

सिक्स पैक बनाने वालों के लिए यह बहुत फायदेमंद है।

2. चने में फाइबर्स की मात्रा अधिक होती है। यानी कि यह पेट के मरीजों के लिए रामबाण है। रोज सुबह भीगे हुए चने खाने से कबजियत दूर होती है और यह डाइजेशन इंप्रूव करता है।

3. इसमें आयरन भी होता है। आयरन

4. भीगे हुए चने में फॉस्फोरस की मात्रा अधिक होती है। इससे दांतों को मजबूती मिलती है और मसूड़ों की प्रॉब्लम भी दूर होती है।

5. चने में कोलेस्ट्रॉल लेवल काफी कम होता है। यह दिल की बीमारियों से बचाता है। इसमें अल्फा लिनोलेनिक एसिड, ओमेगा 3 फैटी एसिड होता है।

6. भीगे हुए चनों का सेवन करने से बॉडी के टॉक्सिन्स दूर होते हैं। यह किडनी प्रॉब्लम से बचाता है।

7. इसमें आयरन और मिनरल्स होता है। जो पीलिया के इलाज में मददगार होता है।

जिंदगी जीने का मकसद हो तो आती है अच्छी नींद

अगर आपने अपनी जिंदगी का कोई उद्देश्य या मकसद तय कर रखा है तो यह आपको स्लीप ऐप्निया नाम की बीमारी से बचा सकता है और आप अच्छी नींद का आनंद ले सकते हैं। वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में इस बात का पता लगाया है कि जिन उम्रदराज लोगों के पास जीवन जीने का मकसद होता है, उनमें नींद से संबंधी बीमारियां कम होती हैं। अमेरिका के नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि ऐसे बुजुर्ग लोग जिनके पास जिंदगी जीने का मकसद होता है उनमें नींद

संबंधी विकार स्लीप ऐप्निया से पीड़ित होने की आशंका 63 प्रतिशत कम होती है। यह एक ऐसा विकार है जिसमें सोने के दौरान सांस लेने में समस्या होती है। हालांकि इस अध्ययन में हिस्सा लेने वाले ज्यादातर लोग बुजुर्ग थे लेकिन अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि यह बड़े पैमाने पर सभी उम्र के लोगों पर लागू हो सकता है।

साड़ी पहनने के दौरान कहीं आप तो नहीं करतीं ये गलतियां ?

शायद ही ऐसी कोई लड़की या महिला होगी जिसे साड़ी पहनना न भाता हो। यह खूबसूरत परिधान आज एक स्टाइल स्टेटमेंट बन चुका है। बॉलिवुड हो या फिर टॉलिवुड, हॉट दीवाज अब बढ़-चढ़कर साड़ियां पहनती हैं। अगर आप भी साड़ी पहनने की की शौकीन हैं, तो फिर जरूर इसे अपने वॉरड्रोब में शामिल कर लें।

साड़ी पहनना एक झंझट

आपको किसी फंक्शन में जाना है या फिर ऑफिस के लिए निकलना है। प्लान बनाया है साड़ी पहनने का। लेकिन कई बार ऐसा होता है कि साड़ी सही तरह से नहीं बंध पाती और हम चेक करते रहते हैं कि कहीं ज्यादा ऊपर तो नहीं हो गई? कहीं टेढ़ी तो नहीं बंधी? ऐसी स्थिति से बचने के लिए यहां कुछ ऐसी गलतियां बताई जा रही हैं जो आपको साड़ी बांधते वक्त बिल्कुल भी नहीं करनी चाहिए।

ज्यादा ऊंची या नीची साड़ी

कई महिलाएं ज्यादा ऊंची या फिर ज्यादा नीची साड़ी बांध लेती हैं। ऐसा करने से आपकी लेग लेंथ (टांगों की लंबाई) पर फर्क पड़ता है। साड़ी बांधने का सही तरीका है कि इसे आप नेवल से ठीक नीचे पहनें और पल्लू इसके सेंटर से घुमाकर कंधों पर लगाना चाहिए।

ज्यादा लूज या टाइट ब्लाउज

आपकी साड़ी बेहद सुंदर है, लेकिन अगर आपने उसके साथ इल-फिटेड ब्लाउज पहना है तो आपकी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। ज्यादा लूज या फिर ज्यादा टाइट ब्लाउज पहनने की वजह से आप तो असहज महसूस करेंगी ही साथ ही आपका ओवरऑल लुक भी अजीब लगेगा।

सही पेटीकोट का चुनाव करें

साड़ी के साथ ब्लाउज के अलावा सही पेटीकोट का चुनाव करना भी जरूरी है। पेटीकोट न तो बहुत ज्यादा लंबा हो और न ही छोटा। ज्यादा लंबा होने पर वह साड़ी की किनारी से बाहर दिखेगा और अगर ज्यादा छोटा हुआ तो फिर साड़ी का फॉल सही नहीं आएगा। अगर नेट वाली या फिर ट्रांसपैरंट साड़ी है तो फिर पेटीकोट और संभलकर खरीदने और कैरी करने की जरूरत है। पेटीकोट नेट से मैच करता हुआ हो और वह एक परफेक्ट फिट का हो ताकि साड़ी एकदम फ्लोइंग लगें।

सही साइज की ब्रा

साड़ी के साथ सही साइज और शेप की ब्रा भी बेहद जरूरी है। अगर ब्लाउज का गला डीप या ब्रॉड है तो फिर उसके हिसाब से अलग तरह की ब्रा आती हैं। बैकलेस ब्लाउज है तो फिर उसके लिए आप ट्रांसपैरंट स्ट्रैप वाली बैकलेस ब्रा पहन सकती हैं। नहीं तो ब्लाउज में ही पैड लगवा लें।

साड़ी में ज्यादा प्लीट्स बनाना

साड़ी में प्लीट्स एक खूबसूरत लुक देती हैं। लेकिन ज्यादा प्लीट्स काम भी खराब कर सकती हैं। कई महिलाएं साड़ी में ढेर सारी प्लीट्स बना लेती हैं जो सही नहीं लगतीं। एक साड़ी में 6 से 7 प्लीट्स ही

होनी चाहिए।

अगर रहना है सेहतमंद तो जरूर करें गार्डनिंग

गार्डनिंग आपके घर को ही नहीं आपको भी सेहमंद रखने का काम करती है। अगर आप गार्डनिंग करते हैं तो आप का शरीर स्वस्थ रहता है।

गार्डनिंग रखती है आप को सेहततंद

गार्डनिंग करना आसान काम नहीं है। बागवानी से न केवल आपका आंगन महकता है बल्कि इससे सेहत भी अच्छी रहती है। इसकी देखरेख में आपको कोई कमी नहीं करनी चाहिए। तपती धूप में पौधों को झुलसने से बचाने के लिए उनकी अतिरिक्त देखरेख जरूरी है। गार्डनिंग एक्सपर्ट संयुक्ता सिंह बता रही हैं, कैसे कुछ बातों का ध्यान रखकर इस मौमस में भीगार्डन को हरा-भरा रखा जा सकता है।

पानी का समय और तरीका

गर्मी के मौसम में पौधों में पानी उस समय दें, जब धूप न हो यानी सुबह सूरज निकलने से पहले और शाम को सूरज डूबने के बाद। पानी गमलों या क्यारियों में ज्यादा समय ठहरना नहीं चाहिए। पौधों में भरपूर मात्रा में पानी दें। सुबह-शाम दोनों समय पानी देना चाहिए। शाम के समय पौधों को पानी की फुहार से नहला भी देना चाहिए।

खाद कितनी और कब

गर्मी में पौधों में रासायनिक खाद न दें तो ज्यादा बेहतर है। रासायनिक खाद पौधों को जला सकती है। गर्मियों में जैविक खाद गोबर खाद पौधों में महीने में दो बार दे सकते हैं। लगभग 20-50 ग्राम प्रति पौधा गोबर खाद आप दे सकते हैं। पौधों में खाद देने से पहले मिट्टी में नमी होनी चाहिए। कभी भी कोई भी फर्टीलाइजर मिट्टी सूखी होने की अवस्था में कभी नहीं देना चाहिए। जैविक और रासायनिक खाद पौधों में एक साथ नहीं देनी चाहिए।

पौधों की कटाई-छंटाई

पौधे की सूखी टहनियां या सूखा भाग तुरंत काट देना चाहिए। पौधों में फूल निकल जाने के बाद उसका बड काट दें, जिससे पौधों की एनर्जी पौधे की ग्रोथ में काम आएगी। पौधों की कटी टहनियों, सूखे फूल और पत्तियों को फेंकें नहीं, इसे कंपोस्ट खाद बनाने के काम में लाया जा सकता है।

4 जून को अल्मोड़ा में राहुल गांधी की जनसभा, तैयारी में जुटी कांग्रेस

अल्मोड़ा। विधायक मनोज तिवारी ने कांग्रेस कार्यालय में बुधवार को आयोजित पत्रकार वार्ता में कहा कि आगामी 4 जून को नेता प्रतिपक्ष और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की अल्मोड़ा में जनसभा आयोजित की जाएगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस इसके लिए तैयारियों में जुट गई है। उन्होंने बताया कि जनसभा की तैयारियों को लेकर गुरुवार को एक बैठक आयोजित की जाएगी, जिसमें उत्तराखंड विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता मौजूद रहेंगे। बैठक में जनसभा को सफल बनाने और विभिन्न व्यवस्थाओं को लेकर चर्चा की जाएगी। तिवारी ने बताया कि राहुल गांधी उत्तराखंड के दो दिवसीय दौरे पर रहेंगे। पहले दिन 4 जून को वह अल्मोड़ा में विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे, जिसके बाद गढ़वाल क्षेत्र में सैनिकों से संवाद करेंगे। दूसरे दिन देहरादून में कांग्रेस विधायकों, नेताओं और पदाधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। उन्होंने कहा कि तैयारी बैठक में कुमाऊं क्षेत्र के कांग्रेस विधायक, पूर्व विधायक और पार्टी पदाधिकारी प्रतिभ.

ाग करेंगे। जनसभा को ऐतिहासिक और सफल बनाने को लेकर विशेष रणनीति तैयार की जाएगी। विधायक तिवारी ने कहा कि राहुल गांधी प्रदेश और केंद्र सरकार की विफलताओं पर बात करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश का युवा खुद को ठगा महसूस कर रहा है। पेपर लीक, बेरोजगारी और महिला असुरक्षा जैसी समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा की कथनी और करनी में अंतर है तथा कांग्रेस भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ रही है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की सभा से प्रदेश के युवाओं में नया जोश आएगा और कांग्रेस नई ऊर्जा के साथ जनता के बीच पहुंचेगी। तिवारी ने कहा कि अल्मोड़ा की जनसभा को वर्ष 2027 विधानसभा चुनाव के आगाज के रूप में भी देखा जा सकता है। पत्रकार वार्ता में कांग्रेस जिला अध्यक्ष भूपेंद्र भोज, महिला कांग्रेस जिला अध्यक्ष राधा बिष्ट, कांग्रेस नगर अध्यक्ष तारा चंद्र जोशी, पूर्व जिला अध्यक्ष पीतांबर पांडे सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

पनियाली-डिग्री कॉलेज मवाकोट सड़क बदहाल

कोटद्वार। कई साल से मरम्मत व डामर न होने से डिग्री कॉलेज-मवाकोट-कलालघाटी मार्ग (पुराना हरिद्वार मार्ग) बदहाल स्थिति में पहुंच गया है। लोनिवि दुगड्डा को हस्तांतरित होने के दो साल बाद भी सड़क की स्थिति नहीं सुधरी है। स्थिति यह है कि डामर उखड़ने से कई जगहों पर गहरे गड्ढे हो गए हैं। मार्ग पर बने रपटे भी क्षतिग्रस्त पड़े हैं। लोग जोखिम में आवाजाही करने को मजबूर हैं। क्षेत्रवासी लगातार मार्ग के डामरीकरण की मांग करते आ रहे हैं लेकिन संबंधित विभाग इसकी सुध नहीं ले रहा है।वर्ष 2017 में पीएमजीएसवाई सिंचाई खंड कोटद्वार ने 8.5 किमी लंबे मार्ग का निर्माण कराया था। इसके बाद ध्रुवपुर में सुखरो नदी व सत्तीचौड़ स्थित ग्वालगढ़ गदेरे में दो डबल लेन स्पान पुलों का निर्माण भी हुआ। पांच साल तक मार्ग का अनुरक्षण कार्य पीएमजीएसवाई ने किया। वर्ष 2023 में सड़क निर्माण को पांच साल पूरा होने के बाद शासन के निर्देश पर इसे लोनिवि दुगड्डा को हस्तांतरित कर दिया गया। तब बरसात से खस्ताहाल हुए मार्ग पर पैच वर्क कराकर इतिश्री कर दी गई।वर्तमान में देखरेख के अभाव में मार्ग खस्ताहाल है। स्थिति यह है कि ध्रुवपुर स्थित सुखरो पुल और सत्तीचौड़ के बीच दो रपटों का एक-एक हिस्सा क्षतिग्रस्त है। वहीं, डिग्री कॉलेज और ध्रुवपुर पुल के बीच कई जगहों पर डामर उखड़ने से मार्ग पर गहरे गड्ढे हो गए हैं जिससे मार्ग पर आवाजाही करना मुश्किल हो गया है।मार्ग से शिवपुर, लालपुर, ध्रुवपुर, सत्तीचौड़, मवाकोट और भाबर के लोग आवाजाही करते हैं। नींबूचौड़-भाबर मार्ग पर यातायात का दबाव अधिक होने के कारण भाबर क्षेत्र की जनता वर्षों से पुराने हरिद्वार मार्ग (डिग्री कॉलेज-मवाकोट-कलालघाटी मार्ग) को वैकल्पिक मार्ग के रूप में विकसित करने की मांग कर रही है। शिवपुर निवासी दिनेश जुयाल, संजय सिंह, अशोक कुमार आदि ने बताया कि मार्ग की हालत काफी खराब है।डिग्री कॉलेज-मवाकोट-कलालघाटी मार्ग के डामरीकरण के लिए धनराशि स्वीकृत हो चुकी है। जल्द ही इस मार्ग का डामरीकरण कराया जाएगा। - कंचन मुयाल, एई लोनिवि दुगड्डा।

सात महीनों में बदला बागेश्वर का विकास परिदृश्य : डीएम कोंडे के नेतृत्व में प्रशासन बना जनसरोकारों का माध्यम

बागेश्वर। आकांक्षा कोंडे के नेतृत्व में जनपद बागेश्वर ने बीते सात महीनों के दौरान विकास, प्रशासनिक सक्रियता और जनकल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपल. ब्धियां अर्जित की हैं। प्रशासन को केवल दफ्तरों तक सीमित रखने के बजाय गांवों, किसानों, महिलाओं, युवाओं और आम नागरिकों तक पहुंचाने की उनकी कार्यशैली ने जिले में सकारात्मक परिवर्तन की नई इबारत लिखी है। उनके कार्यकाल में विक. ास योजनाओं को धरातल तक पहुंचाने के साथ-साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में भी प्रभावी पहलें देखने को मिली हैं।

जनपद की आर्थिक गतिविधियों को गति देने के उद्देश्य से बंद पड़ी औद्योगिक इकाइयों को पुनर्जीवित करने की दिशा में ठोस प्रयास किए गए। अल्मोड़ा मैग्नेसाइट फैक्ट्री एवं कौसानी चाय फैक्ट्री को पुन: संचा. लित कराने की प्रक्रिया ने स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर सृजित किए हैं। साथ ही श्रमिकों के लंबित वेतन और भविष्य निधि भुगतान की दिशा में भी प्रशासनिक पहल ने उम्मीद जगाई है। खड़िया खनन क्षेत्र में लंबे समय से चली आ रही व्यावहारिक समस्याओं का समाध ान निकालते हुए प्रशासन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा प्रदान की।

ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कपकोट क्षेत्र में 'कुटकी' जैसी औषधीय फसल की खेती को प्रोत्साहन देना प्रशासन की एक दूरदर्शी पहल साबित हुई है। वर्तमान में 13 से 14 ग्राम पंचायतों की लगभग 350 महिलाएं 46 हेक्टेयर क्षेत्रफल में इसकी खेती कर लाखों रुपये की आय अर्जित कर रही हैं। इससे न केवल महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार आया है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली है।

आपदा प्रबंधन एवं पुनर्निर्माण कार्यों में भी प्रशासन की सक्रियता स्पष्ट रूप से दिखाई दी। जिलाधिकारी के प्रयासों से 1109.25 लाख रुपये की धनराशि स्वीकृत हुई, जिसके माध्यम से क्षतिग्रस्त सड़कों के सुदृढ़ीकरण, पैदल पुलों के निर्माण, विद्यालयों की सुरक्षा और सिंचाई गूलों की मरम्मत जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को गति मिली। पर्वतीय जनपदों में आपदा प्रबंधन को लेकर यह पहल विशेष महत्व रखती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके कार्यकाल में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज हुई। पंडित बद्रीदत्त पांडे परिसर के विज्ञान संकाय भवन का वर्षों बाद सफल हस्तांतरण

सुनिश्चित किया गया। लगभग 183.35 लाख रुपये की लागत से निर्मित यह भवन अब विद्यार्थियों के उपयोग में आ चुका है, जिससे आधुनिक प्रयोगशाला और बेहतर शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ छात्रों को मिलने लगा है।

स्वरोजगार और रिवर्स माइग्रेशन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आधुनिक एवं एकीकृत कृषि मॉडल को प्रोत्साहित किया गया। सलीगांव के किसान मनोज कोरंगा द्वारा पॉलीहाउस, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से प्रस्तुत सफल मॉडल ने क्षेत्र के अन्य किसानों को भी नई दिशा दिखाई है। इसके साथ ही जनपद में कीवी उत्पादन एक नई आर्थिक संभावना बनकर उभरा है। वर्ष 2022-23 से पूर्व सीमित दायरे में रहने वाली कीवी खेती अब लगभग 80 हेक्टेयर क्षेत्र तक फैल चुकी है और 350 से अधिक किसान इससे जुड़ चुके हैं। इससे किसानों की आय में वृद्धि होने के साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली है।

तुनालका में प्लास्टिक कचरा प्रबंधन इकाई का संचालन ठप

उत्तरकाशी। पंचायतों को स्वच्छ एवं प्लास्टिक मुक्त करने के लिए तुनालका में बनाए गए प्लास्टिक कचरा प्रबंधन इकाई का संचालन ठप है। इससे स्वच्छ भारत अभियान के दावों पर सवाल खड़े हो रहे हैं। स्वजल की ओर से दो वर्ष पहले तुनालका गांव के समीप यमुनोत्री हाईवे पर करीब 14 लाख की लागत से बने प्लास्टिक कचरा प्रबंधन इकाई भवन को जिला पंचायत को हैंडओवर कर दिया था जिसे जिला पंचायत आज तक उपयोग में नहीं ला पाई है। अब यूनिट के अंदर कूड़ा निस्तारण के लिए लगाई गई मशीन भी जंग खा रही है। प्रत्येक गांव को स्वच्छ एवं प्लास्टिक कचरा मुक्त के उद्देश्य से स्वच्छ भारत मिशन के तहत जनपद के प्रत्येक ब्लॉक में एक एक प्लास्टिक कचरा प्रबंधन इकाई की स्थापना की गई है जिसका उद्देश्य स्वच्छता वाहनों से ग्राम पंचायतों से आने वाले सूखे कूड़े का मशीन से निस्तारण करना था। बीते वर्ष यूनिट का शटर आपदा के मलबे से क्षतिग्रस्त हो गया था। आपदा के एक वर्ष बाद न तो आपदा का मलबा हटा और न ही टूटा शटर ठीक हो पाया। लावारिस हालात में पड़ी यूनिट के अंदर रखी कीमती मशीन का भी चोरी होने का खतरा बना है। जिला पंचायत के अपर मुख्य अधिकारी श्याम लाल का कहना है कि 2025 में यूनिट के भवन का एक हिस्सा आपदा से क्षतिग्रस्त हो गया था जिसे बजट के अभाव में ठीक नहीं करवाया जा सका। क्षतिग्रस्त यूनिट को जिला पंचायत स्वयं के संसाधनों से ठीक करने का प्रयास किया कर रही है।

धू-धू कर जल रहे नई टिहरी और पौखाल रेंज के जंगल

नई टिहरी। नई टिहरी-चंबा सड़क मार्ग से लगे और पौखाल रेंज के चीड़ के जंगल जल रहे हैं। गत मंगलवार को भोनाबागी स्थित जंगल में लगी आग बुधवार सुबह तक जिला कारागार से सटे जंगल में आ पहुंची। पूर्वाह्न को आग चवालखेत के पीछे के जंगल तक आ गई। काफी मशक्कत के बाद भी वन कर्मी आग को काबू नहीं कर पाये।आग की तेज लपटों ने चवालखेत स्थित देवेंद्र सिंह चौहान के बागीचे अपनी चपेट ले लिया जिससे बागीचे में सेब के पेड़ और कीवी की बेलों बुरी तरह से झुलस गए। देवेंद्र ने बताया कि उन्होंने वन विभाग के कंट्रोल रूम और कर्मियों को आग की सूचना दी लेकिन मौके पर कोई नहीं पहुंचा। आग को काबू करने की उन्होंने भी कोशिश की लेकिन नाकामयाब रहे। बताया उनकी वर्षों की मेहनत पर आग ने पानी फेर दिया। उन्होंने प्रशासन से बागीचे में हुए नुकसान का आंकलन कर मुआवजे की मांग की है।इस बाबत रेंज अधिकारी प्रदीप चौहान ने बताया कि आग पर काबू पाने के लिए सुबह ही विभागीय कर्मियों के साथ फायर वाचरों को मौके पर भेजा दिया गया था। दूसरी ओर, पौखाल रेंज के स्यूरी गांव के जंगल में लगी आग तेज हवाओं के चलने से और भड़क उठी जिससे ग्रामीण दहशत में आ गए।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 43/।,वृंदायन,आनंदलोक कॉलोनी (हुंडई शोरूम के पीछे)रामपुर रोड,देवल्चौर खाम, हल्द्वानी, जिला नैनीताल (उत्तराखंड) पिन 263139 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।